Godda College, Godda

Name of the teacher	Course	Sem	Subject	Title	Mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	T.C-204	Inclusive Teaching	Pdf

P. Kumar
13/05/2020

TC-204
Unit-7.

- **Inclusive teaching (समावेशी शिक्षण):-**

समावेशी शिक्षा दार्शनिक विश्वास के आधार पर शैक्षिक अभ्यास को संचालित करती है जो सभी शिक्षार्थियों दिव्यांग लोगों और बिना उन लोगों के साथ उचित आयु वर्ग के सदस्यों में एक साथ शिक्षित होने का अधिकार है, और यह कि सभी शिक्षा में लाभान्वित होंगे सामुदायिक विद्यालयों के नियमित कक्षाओं में। इनके अंदर शिक्षक, माता-पिता और अन्य सभी शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं और जरूरतों के अनुसार नियमित पाठ्यक्रम को लचीले ढंग से व्याख्या करने और लागू करने के लिए उचित और पर्याप्त संसाधन का उपयोग करके सहयोगात्मक रूप में काम करते हैं।

पहले समावेशी शिक्षा की परिकल्पना सिर्फ विशेष आवश्यकता वाले छात्रों (CWSN) के लिए की थी लेकिन आधुनिक समय में हर शिक्षक को इस सिद्धांत को अपनी कक्षा में विस्तृत रूप से व्यवहार में लाना चाहिए।

समावेशी शिक्षा या एकीकरण के सिद्धांत की देन अमेरिका और कनाडा को जाता है। प्राचीन शिक्षा पद्धति की जगह नई शिक्षा नीति का प्रयोग आधुनिक समय की मांग है। समावेशी शिक्षा विशेष विद्यालय या कक्षा को स्वीकार नहीं करता।

Scanned with CamScanner

दिव्यांग बालकों को अब सामान्य बालकों से अलग नहीं किया जा सकता है। उन्हें भी सामान्य छात्रों की तरह ही शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है।

समावेशी कक्षाओं की सामान्य अवधारणा -

साधारणतः एक कक्षा में अपनी आयु के हिसाब से छात्र अध्ययनरत होते हैं चाहे उनका आकादमिक (बुद्धि) स्तर ऊँचा या कम ही क्यों न हो। शिक्षक सामान्य और दिव्यांग सभी छात्रों को एक ही वर्ग में एक साथ अध्ययन करने का अवसर प्रदान करते हैं और सभी छात्रों से मित्रवत व्यवहार करते हैं। दिव्यांग छात्रों की मित्रता अक्सर सामान्य छात्रों के साथ करवाई जाती है ताकि एक दूसरे के सहयोग की भावना को विकसित किया जा सके।

शिक्षक कक्षा में सहयोग की भावना बढ़ाने के लिए कुछ कार्य कर सकते हैं -

- सामूहिक भावना को बढ़ाने के लिए खेलों का आयोजन किया जा सकता है।
- पुस्तकों और गीतों का आदान-प्रदान
- छात्रों को शिक्षक की भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करना
- विभिन्न क्रियाकलापों के लिए छात्रों का समूह बनाना
- बालकों के लिए लक्ष्य निर्धारण करना - आदि

Scanned with CamScanner

सह शिक्षण पद्धति द्वारा सामान्यतः व्यवहार में आने वाली समावेशी अवधारणा :-

- एक शिक्षा, एक सहयोग - इस मॉडल में एक शिक्षक शिक्षा प्रदान करते हैं दूसरा प्रशिक्षित शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की आवश्यकताओं की ओर कक्षा को सुव्यवस्थित रखने में सहयोग करते हैं।

- एक शिक्षा एक निरीक्षण - एक शिक्षक शिक्षा देते हैं दूसरा छात्रों का निरीक्षण करते हैं।

- समानान्तर शिक्षा - इसमें आधी कक्षा को मुख्य शिक्षक तथा आधी को विशिष्ट शिक्षा प्राप्त शिक्षक शिक्षा देते हैं। दोनों समूहों को एक जैसा पाठ पढ़ाया जाता है।

- स्थिर एवं भ्रमण शिक्षा - इसमें कक्षा को कई छोटे समूहों में बाँटा जाता है। मुख्य शिक्षक शिक्षण कार्य करते हैं, दूसरा विशेष शिक्षक दूसरे स्तर पर इसी की जाँच करते हैं।

- वैकल्पिक शिक्षा - मुख्य अध्यापक अधिक छात्रों को पाठ पढ़ाते हैं जबकि विशिष्ट शिक्षक छोटे समूह को दूसरा पाठ पढ़ाते हैं।

- समूह शिक्षा - यह पारंपरिक शिक्षा पद्धति है इसमें दोनों शिक्षक योजना बनाकर शिक्षा देते हैं। यह काफी लोकप्रिय एवं सफल शिक्षण पद्धति है।

Scanned with CamScanner

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य :-

समावेशी शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

- बालक के विकास के लिए सहायक वातावरण उपलब्ध कराना।
- सीखने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- समाज का बालकों के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।
- बालक में समाज के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करना।
- बालकों में नवजीवन का संचार करना।
- बालकों को स्वाधीन होने के लिए व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना।

समावेशी शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में समस्याएँ :-

एक बच्चे को बड़े होने और सीखने के लिए ऐसे वातावरण की आवश्यकता होती है जहाँ उसकी सामाजिक तथा भावनात्मक जरूरतें पूरी होती हों ऐसा सहायक वातावरण निर्मित करने के लिए यह बेहद जरूरी है कि समुदाय के हर उस सदस्य को जो समावेश की प्रक्रिया में संलग्न है समान प्रभाव समझा जाए। इसमें कोई देने वाला और कोई लेने वाला नहीं होता क्योंकि यह कोई

दान की क्रिया नहीं है, बल्कि ऐसा कार्य जो उससे जुड़े सभी लोगों को लाभान्वित करता है।
विद्यालय का परिवेश उस बच्चे के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है जिसे समावेश के लिए चुना जाता है और जो लोग समावेश की प्रक्रिया को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं वे हैं- बच्चा, माता-पिता, विद्यालय प्रशासन, विद्यालय के सहयोगी कर्मचारी एवं शिक्षक। यही वे समुदाय हैं जिनके लिए समावेश के अर्थ को समझना आवश्यक है।
यूनेस्को (2005) ने समावेश की राह में निम्न रुकावटों की सूची बनाई है।

- दृष्टिकोण सम्बन्धी कारक
- भौतिक रुकावटें
- पाठ्यक्रम
- शिक्षकों के दृष्टिकोण तथा क्षमताएँ
- भाषा तथा सम्प्रेषण
- सामाजिक - आर्थिक कारक,
- वित्तीय संसाधन
- शैक्षिक व्यवस्था का संगठन और नीतियाँ।

अक्षमता ग्रस्त बच्चों के लिए निर्धारित नीति के क्रियान्वयन में कुछ स्पष्ट समस्याएँ दिखाई देती हैं, जो इस प्रकार हैं-

→ मुख्य धारा में लाना या अलग समूहों में सीमित कर देना -

समावेशी शिक्षा का अभिप्राय असमर्थ बच्चों को शिक्षा के प्रवेश में लाना चाहे विशेष विद्यालय में या फिर सामान्य विद्यालय में उनकी जरूरतों के अनुसार सीखने का अनुकूल वातावरण देना। वहीं S.S.A में किसी भी बच्चे को अस्वीकार न करने की नीति हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार देती है और ऐसे बच्चों को मुख्यधारा में शामिल किये जाने का समर्थन करती है। परन्तु संभावनाओं के अभाव में हर बच्चे पर अलग से ध्यान न दिए जाने से ये बच्चे विद्यालय के भीतर अलग समूहों में सीमित हो जाते हैं।

⇒ शिक्षकों की शिक्षा के कार्यक्रम - कक्षाओं में समावेशी वातावरण प्रदान करने के काम में शिक्षकों की शिक्षा एक कमजोर कड़ी बनी हुई है। शिक्षकों की शिक्षा की डिग्री तथा डिप्लोमा कार्यक्रमों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा में विशेषज्ञता हासिल करने का कोई प्रावधान नहीं है।

⇒ सेवाकाल के दौरान शिक्षकों की शिक्षा - शिक्षकों का प्रशिक्षण समावेशी शिक्षा नीति के अन्तर्गत आने वाले अनेक नितान्त आवश्यक अंगों में से एक है और इसका अपने चिन्तानक पहलू भी है। कक्षा के भीतर विविध प्रकार की चुनौतियों का समाधान करने के लिए तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सीखने के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करना, शिक्षकों में आवश्यक कौशलों तथा आत्मविश्वास को विकसित करना एक बहुत बड़ा काम है। इसके लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण विशेषज्ञों के सहयोग आदि संभावनाओं के पर्याप्त सहारे की आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner

⇒ अपर्याप्त स्रोत शिक्षक - सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत हर अक्षमता वाले बच्चे को पर्याप्त सेवाएँ उपलब्ध कराते हुए पास-पड़ोस के विद्यालय में शामिल कराया जाना चाहिए। RTE अधिनियम 2009 में ऐसे बच्चों के विशेष प्रशिक्षण, चाहे आवासीय हो या गैर-आवासीय के लिए प्रावधान किया गया है। स्रोत शिक्षकों को आवश्यकता पर नियुक्त करना अक्षमता ग्रस्त बच्चे को सशक्त करने की राह में कुछ अन्य बड़ी रुकावट है।

⇒ सहयोग न करने वाले माता-पिता तथा समुदाय - अक्षमता का एक सामाजिक पहलू भी होता है जिसमें परिवार तथा समुदाय अक्षमता ग्रस्त बच्चे की अन्तर्निहित क्षमता को विकसित करने और उसके जीवन के स्वरूप को निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। समावेशी शिक्षा में यदि ऐसे बच्चों के परिवार सहयोग नहीं देते तो उनकी ओर बढ़ने के सभी प्रयास निष्फल होंगे।

समावेशी कोशिशें / समावेशन के लिए रणनीतियाँ:-
अक्सर समावेशन की धारणा का यह अर्थ लिया जाता है कि जो किसी प्रकार की दिव्यांगता, कमजोरी या कमियों का शिकार होते हैं उन्हें मुख्यधारा में शामिल करना लेकिन इसका दूसरा पहलू है सामान्य शैक्षणिक सन्दर्भ में 'समावेशन' ताकि विद्यार्थियों की ताकत और ऊर्जा, उनकी विविध भाषाओं तथा विश्वविद्यालय के भीतर व बाहर वाले उनके विशिष्ट अनुभवों के पूरे दायरे को साथ जुड़ा जा सके।

शिक्षकों के लिए खास चुनौती होती है क्योंकि उन्हें वही कक्षाएँ सम्भालनी पड़ती है जिसमें इसका का खतरा रहता है कि कहीं विद्यार्थी को दिए जाने वाले असाइनमेंट, जांच, फीडबैक, न्यूनतम और विकल्प सीमित न हो जाएं।
समावेशन के लिए कुछ महत्वपूर्ण विचार निम्नांकित है:-

⇒ एक आवश्यक संसाधन के रूप में बहुभाषिकता - विद्यार्थियों का विभिन्न भाषाओं सम्बन्धी ज्ञान और उसके प्रति आत्मीयता शिक्षण का एक शक्तिशाली संसाधन होता है क्योंकि इसी के जरिए विद्यार्थियों की दुनिया को कक्षा में लाया जा सकता है। भिन्न-भिन्न भाषाएँ हमारे क्षितिज का विस्तार करती है।

⇒ पाठ्य की प्रकृति को पुनः परिभाषित करना - विश्लेषण और चिन्तन के लिए प्रयुक्त सैद्धांतिक पाठ्यों के अलावा मल्टीमिडिया पाठ्यों का प्रयोग, जैसे - फिल्में, कविताएँ, अखबार की कतरनें, विज्ञापन, कार्टून, लघुकथाएँ, जीवनी और आत्मकथाएँ, मानव जाति व संस्कृति का लघु अध्ययन, अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर चिन्तन करना। यह शोध और सिद्ध शैक्षिक सिद्धांत है कि व्यक्तिगत विवरण विद्यार्थियों के वर्तमान ज्ञान को नए अधिगम के साथ जोड़ने में उनकी सहायता करते है। जब विद्यार्थियों को इन कथाओं पर एक दर्शक के रूप में चिन्तन करने का मौका मिलता है तो उन्हें अपना विकास करने का मौका मिलता है।

⇒ ऐसी प्रमुख कार्यों और प्रश्नावली को विकसित / तैयार करने के लिए विद्यार्थियों की सांस्कृतिक और सामाजिक स्तरों के सहित आकलन स्थापित करने के लिए प्राथमिक रूप से काम करने की जरूरत है।

⇒ विशिष्ट अधिगम अक्षमताएँ (Specific Learning Disability) (SLD) के लिए विशिष्ट प्रकार के निर्धारण की तकनीकों को पूरा करना। SLD को अक्सर छुपी हुई अक्षमता का नाम दिया जाता है क्योंकि इसका पता आसानी से नहीं लगाया जाता है और इसी वजह से अभिभावक और शिक्षक असमंजस में पड़ जाते हैं। ऐसे बच्चों की बौद्धिक क्षमता का स्तर औसत या औसत से अधिक होते इसलिए वह कक्षा में अन्य बच्चों के साथ ही चलते हैं पर हो सकता है उन्हें पढ़ने, समझने, वर्तनी, लिखने और गणित संबंधी कार्य करने में कठिनाई होती है।

डिस्ग्राफिया (Dysgraphia) – लिखने में कठिनाई
डिस्लेक्सिया (Dyslexia) – पढ़ने और समझने की कठिनाई
डिस्कैलकुलिया (Dyscalculia) – संख्यात्मक अवधारणाओं में कठिनाई
Easily distracted – ध्यान देने पर कठिनाई

सामान्य कक्षा में इन बच्चों के अधिगम की कठिनाई आदि को प्रभावी ढंग से पूरा करना शिक्षकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन शिक्षकों को यह चुनौती स्वीकार करनी होगी।

Scanned with CamScanner